इजीप्त की सेना क्रांति को कुचलने का प्रयास कर रही है ।

14 अगस्त 2013 को इजीप्त की सेना प्रेसिडेन्ट मोहम्मद मोर्सी को हटाये जाने के खिलाफ जारी मुस्लिम ब्रदरहुड के दो शांतिपूर्ण धरणों पर सशस्त्र हमला किया । इस हमले मे हजारों लोग मारे गये एंव कई हजार घायल हुए । इजीप्त मे जिस क्रांतिकारी प्रक्रिया की शुरूवात 2011 मे हुई थी यह भयावह दिन उस प्रक्रिया की संकट की घडी थी जिसकी आगे चलकर एक प्रतिक्रांति के रूप मे उजागर होने की सम्भावना है ।

पूर्व राष्ट्राध्यक्ष हुस्ने मुबारक के समय मे जिस तरह का लौह –तानाशाही इजीप्त मे मौजूद था, उसी तानाशाही की ओर लौटने का सेना का प्रयास निःसन्देह निन्दनीय है । लेकिन जो बात 14 अगस्त को एक अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण त्रासदी बना देती है ं वह यह है कि मुस्लिम ब्रदरहुड पर सेना द्वारा इस अमानवीय क्रूर हमले को न केवल मुबारक पंथीओ ने समर्थन दिया है, बल्कि 2011 के क्रांतिकारी जनवादी आन्दोलन मे शामिल कई गैर–इस्लामी जनवादियों ने भी इसे समर्थन दिया है । खासतौर पर इजीप्त के उदारपंथियो के बारे यह बात सही है ।

कत्लेआम के एक दिन के बाद सेनाध्यक्ष अबदेल फत्ताह अलसिसि एंव उनके अंतरिम सरकार ने न केवल कर्फ्यू बल्कि इमर्जेन्सी की घोषणा कर दी, जिस इमर्जेन्सी के सहारे मुबारक सरकार 2011 तक तीन दशक सत्ता पर बनी हुई थी । सिवाय, एक दिन पहले सिसि ने सेना, पुलिस, एंव कट्टर मुबारकपंथी पृष्ठभूमि के 25 स्थानिय गवर्नरो को नियुकत कर अपने तानाशाही प्रवृत्ति का इजहार किया।

दूसरी ओर सत्ता से हटाये जाने के बाद मुस्लिम ब्रदरहुड का रवैया उतना ही निन्दनीय था। सत्तापर पुनर्वापसी के मांग को लेकर आन्दोलन मे उतरकर यह संगठन अपने तमाम विरोधीआं को इहुदी, ईसाई कहकर गालीगलौज कर रहे थे, उन्हे मिस्र के ''अच्छे'' मुस्लिमों के मुकाबले निकृिष्ट करार दे रहे थे । अगस्त 14 के कत्लेआम के विरोध मे प्रदर्शन के दौरान उन्होने न केवल सरकारी इमारतों एंव पुलिस पर हमला किया बल्कि अल्पसंख्यक इसाइयों के मठ एंव गिर्जाघरों पर भी हमला बोला ।

ऐसी स्थिति मे उस बहु–आयामी क्रांतिकारी जनआन्दोलन की दिशा क्या होगी, जिसने 30 जुन को प्रदर्शन आयोजित किया था । एंव जिसके फलस्वरूप मुस्लिम ब्रदरहुड को सत्ता से हाथ धोना पडा? 30 जुन 2013 को लाखों लोग रास्ते पर उतर कर तानाशाही इस्लामिक शासन से मुक्ति की मांग की थी, लेकिन मिलिटरी शासन के वापसी का मांग उनका नही था । इस आन्दालन की सफलता ने एक ओर क्रांतिकारी जनवादी ताकतो को गोलबंद होने का अवसर दिया तो दूसरी ओर इसी आन्दोलन ने सेना को भी उपना शासन कायम करने का मौका मुहैया का दिया ।

दुर्भाग्य से सिर्फ सेना ही इस मौके का फायदा उठाने मे सक्षम हुई है । 30 जून के बाद क्रांतिकारी जनवादी आदोलन कई गुटों में बट गई है, जिनमे से कुछ गुट जनवाद नही बल्कि व मिलिटारी शासन के हिमायती बन गये है । इन गुटों मे से एक गुट वामपंथी – उदारवादी नौजवान गुट 'तामारॉड' आन्दोलन है जिसने 30 जुन के आन्दोलन को संगठित करने मे प्रमुख भूमिका अदा की थी । एक और उदाहरण वामपंथी नासेरपंथी 'हामादिन सब्बाही' है जिन्हे 2012 के चुनाव मे बडी संख्या मे वोट हासिल हुई थी लेकिन जिन्होने हाल फिलहाल मे कहा है कि 2011–12 के मिलिटरी शासन के दारान ''मिलिटरी शासन मुर्दाबाद'' का नारा देना क्रांतिकारियों की गलती थी ।

लेकिन इनमे सबसे बडे अपराधी वे उदारवादी राजनीतिज्ञ है जो जुलाई के शुरुवात मे बनी सेना की अंतरिम शासन मे शामिल हुए है । आगे आनेवाले दिनों मे इस तरह के अवसरवाद का परिणाम भयावह साबित हो सकता है । क्योंकि यह न केवल जनवाद के संकल्पना को बदनाम करेगा, बल्कि एक सकारात्मक मानववादी अर्थ में क्रांन्ति के संकल्पना को भी बदनाम करेंगा ।

इजीप्त के लोगों को अच्छी तरह पता हैं कि इजीप्त के सेना को अमरीका कर्ज देती है एंव इजीप्त की सेना एंव पुलिस को अस्त्र –शस्त्रों की पूर्ती करती है जो आम जनसाधारण के खिलाफ इस्तेमाल होता है । बॅराक ओबामा का इजीप्त के कत्लेआम पर अत्यन्त सोमित आलोचना मैन्चेस्टर गार्डीयन पत्रिका के हेडलाइन मे इस तरह छप कर आया

थाः **''इजीप्त मे मृतको की संख्या जब लगातार बढ रही है ,ओबामा, अन्तरराष्ट्रोय निन्दा को धीमे स्वर मे व्यक्त कर रहे है।''** सेना का समर्थन कर रहे उदारपंथियो को यह बात जरूर सतायेगी क्योकि इजीप्त एक ऐसे क्षेत्र मे बसा हुआ देश है जहॉ अमरीकी साम्राज्यवाद के बारे मे विशेषरूप से नफरत है ।

ऐसी परिस्थिति मे क्रांतिकारी जनवादी आन्दोलन मे शामिल कुछ व्यक्तियों का सैद्धांतिक रूख आशा के किरण जैसी है । उदारवादी अन्तरिम उपाध्यक्ष मोहम्मद एल बरादेई ने 14 अगस्त के कत्लेआम के खिलाफ विरोध दर्शाते हुए राजीनामा दे दिया । अप्रैल 6 आन्दोलन जिसने 2011 मे युवाओं के जन आन्दोलन को संगठित करने मे प्रमुख भूमिका निभाई थी, ने घोषणा किया : ''मुस्लिम ब्रदरहुड एवं अन्तरिम सरकार अपने अपने उद्दे"यों की पूर्ति के हेतु खुनी संघर्ष का रास्ता चुना, शासकवर्ग अपने शासन को मजबूत करने पर उतारू था तो मुस्लिम ब्रदरहुड नरसंहार मे मृतको के खून का इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए करना चाहती थी''। उन्होने आगे और कहा : जारी संकट समाप्त करने एवं देश को जनतांत्रिक रास्ते पर चलने के लिए एक ऐसे राजनीतिक समाधान की आवश्यकता है जो क्रांन्ति के लक्ष्यों की प्राप्ति को सम्भव बना सके । उपाध्यक्ष मोहम्मद एल–बारदेई ने जिन्होने पद से राजीनामा दिया है इसी समाधान की ओर ईशारा किया हैं।''(अल–अहरम ऑनलाइन, अगस्त 15, 2013).

इजीप्त के क्रांतिकारी समाजवादियों ने 14 अगस्त के कत्लेआम के बारे मे कहा है : ''यह इजीप्त की क्रांति को समाप्त कर देने के उद्देश्य से एक खूनी रिहर्सल था । इसका लक्ष्य है, अपने अधिकारों के लिए लढनेवाले इजीप्त के लोगो के क्रांतिकारी अभिलाषाओं को एक आंतक के माहौल के जरिए कुचल देना –चाहे वे मजदूर हो, गरीब हो, क्रांतिकारी नौजवान हों। यह कत्लेआम इस वास्तविक सम्भावना की ओर इशारा है कि सेना अब क्रांतिकारी जनवादी ताकतों को कुचलने की तैयारी करेगी, ठीक उसी तरह जिस तरह उसने मुसिलम ब्रदरहुड को कुचला है ।

आज की स्थिति मे यह प्रतीत होता है कि सेना को इस दमनात्मक कार्रवाही के लिए काफी समर्थन पाप्त है । यह समथन इस अफवाह के आधार पर है कि मुस्लिम ब्रदरहुड एक आतंकवादी संगठन है । लेकिन जैसे जैसे कत्लेआम के नकारात्मक पहलु, इसके भयावह मानवविरोधी परिणाम उजागर होते जायेंगे, यह समर्थन निश्चित तौर पर कम होगा । और फिर आर्थिक नीति के क्षेत्र मे सेना के पास नवउदारवादी पूँजीबाद के इस अथवा उस संस्करण के अलावा कुछ नही है ।

इसलिए जैसे जैसे, इजीप्त की अर्थव्यवस्था संकटग्रस्त होगा, सम्भवतः चन्द महिनो मे ही, सेना के वर्तमान जनरल सिसि उतने ही बदनाम हो सकते है जितने कि 2013 तक सेना का संगठन सुप्रीम कौंसिल ऑफ आर्मड फोर्सेस (SCAF) हुई थी । लेकिन सम्भावना यह भी है कि तब तक सेना अपनी जडे इतनी गहरी जमा चुकी होगी कि निकट भविष्य मे उसके खिलाफ विद्रोह की सम्भावना न रहे । दूसरी ओर सम्भावना यह भी है कि सेना के बदनाम होने की स्थिति मे लोगों की हमदर्दा फिरसे इस्लामवादियों के पक्ष मे हो जाये । इन दोनो सम्भावनाओं मे से किसी एक की भी वास्तव मे रुपान्तरित न होने की स्थिति मे सेना द्वारा जारी दमन का परिणाम एक हिंसक इस्लामिक आन्दोलन के उभरने मे भी हो सकता है –जैसा कि 1990 मे हुआ था। यह स्पष्ट है कि क्रांन्तिकारी जनवादी आन्दोलन आज दरकिनार हो गई है और यही 2013 में इजीप्त की त्रासदी है ।

ऐतिहासिक महत्व का एक विशाल देश होने के नाते, जिस लिहाज से इजीप्त 2011 मे सम्पूर्ण अरबक्रांति का अग्रदूत बन चुका था 14 अगस्त के कत्लेआम ने मध्यपूर्व के दूसरे देशों मे बचे खुचे क्रांतिकारी उत्साह को मंद कर दिया है । इजीप्त की घटनाओं का सिरिया पर निश्चित तौर पर नकारात्मक प्रभाव पडेगा । इसी तरह टयूनिशिया में जहॉ इस्लामवादी एन्नाहाडा पार्टी के खिलाफ वहॉ की धर्मनिरपेक्ष वामपंथ संघर्षरत है, इस कत्लेआम का नकारात्मक प्रभाव पडेगा । साथ ही इजीप्त की साम्प्रतिक घटनायें विश्व के पैमाने पर क्रांति की संकल्पना को ही नुकसान पहुंचायेगा ।

लेकिन अगर इजीप्त एंव विश्व के क्रांतिकारी वामपंथी ताकतें इजीप्त के साम्प्रतिक त्रासदी से सही सीख ले पायें, –जिसका अर्थ है कि हम हर परिस्थिति में अवसरवाद से बचे, अर्थात सेना एंव इस्लामिक कट्टरवाद दोनों से समान दूरी बनाये रखते हुये इस बात को स्पष्ट करें कि हम किसके पक्ष में है, क्या चाहते है –बजाय सिर्फ इसके कि हम किसके विरोध मे है, तो हम एक शक्तिशाली ताकत के रूप मे उभरेंगे । इजीप्त के समाज मे जारी संकट के मद्येनजर, यह निश्चित रुप से सम्भव है कि यहॉ जनवादी क्रांतिकारी ताकतों को देर–सबेर एक और मौका मिलेंगा कि वे एक और जनआन्दोलन को लामबंद करें, विस्तार करें , लेकिन फिलहाल यह स्पष्ट हो चुका है कि तात्कालिक तौर पर इजीप्त एक प्रतिक्रिया के दौर मे प्रवेश किया है ।

(अन्तराष्ट्रीय मार्क्सवादी– मानववादी संगठन (IMHO) के वेबसाइट पर प्रकाशित केविन एंडरसन के लेख का हिन्दी अनुवाद) ।